आदि, वियादि, उपादि, टेई ताप लग़नि हिन जीअ खे,
वही तनी जे वह में, सो जनम विञाए बादि
जाग़ी करे न यादि, सामी सुपेरियुनि खे.

सामीजी जीवन के ताप-त्रय का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि मनुष्य/जीव को तीन प्रकार के ताप (दु:ख) भोगने पड़ते हैं। ताप-त्रय के प्रवाह में बहते हुए मनुष्य व्यर्थ ही अपना जीवन नष्ट कर रहा है। किन्तु वह जाग्रत हो कर प्रियतम पररमेश्वर को याद नहीं करता।

संसार में जो भी जन्म लेकर आया है, उस जीव/मनुष्य को सुख और दु:ख भोगना ही पड़ता है । सुख की अपेक्षा दु:ख ही अधिक भोगने पड़ते हैं। दु:ख मानो जीवन का एक अविभाज्य अंग है और वह कम या अधिक प्रमाण में सबको भोगना ही पड़ता है। दु:ख-रहित जीवन नहीं होता। पंच महाभूतों द्वारा, पृथ्वी, आप, अग्नि, तेज और आकाश द्वारा प्राप्त दु:ख मनुष्य को भोगने ही पड़ते हैं। वनस्पति, पशु, कीड़े आदि या मनुष्य प्राणी भी दु:ख देने वाले होते हैं। इन दु:खों को ही 'ताप' कहा गया है। शास्त्रों में तीन प्रकार के ताप या दु:ख बताये गये हैं, जिनका उल्लेख सामीजी ने उपर्युक्त श्लोक में किया है। ये ताप-त्रय इस प्रकार हैं-

(1) **आधि-** आधि ताप का अर्थ है मानसिक/मन का दु:ख, आंतरिक पीड़ा। कोई चिंता लगी रहना, मन क्षय से ग्रस्त होना, असफलता मन में चुभती रहना, भ्रम/भ्रांति, स्मृति-भ्रंश, काम क्रोधादि विकारों में मन व्याप्त रहना, बेचैनी आदि मानसिक वेदनाएँ 'आधि' दु:ख या ताप हैं।

(2) **व्याधि-** व्याधि का अर्थ है रोग, बीमारी । मनुष्य के ये दैहिक ताप या दु:ख हैं। अनेक प्रकार के ज्वर/बुखार, रक्त-दोष के कारण होने वाले रोग, देह के भीतरी अवयवों का शोषण, सूजन, दमा, हृदय-रोग, बुढ़ापे के दु:ख आदि शारीरिक ताप हैं।

(3) **उपाधि-** शरीर के बाहरी दु:ख या भौतिक दु:ख 'उपाधि' ताप कहे जाते हैं। अन्य प्राणियों द्वारा मनुष्य को मिलने वाले ताप, मनुष्य को मनुष्य द्वारा ही मिलने वाले ताप, झगड़े-फिसाद, युद्ध, बाढ़, भूकंप आदि के कारण मनुष्य को मिलने वाले दु:ख इसके अंतर्गत आते हैं। इन्हें दैवी/ईश्वरीय ताप भी कहा जाता है।

सारांश, ये त्रिविध ताप हैं। कोई भी प्राणी इनसे छुटकारा नहीं पा सकता। इन दैहिक, दैविक और भौतिक तापों के सहन करने में ही मनुष्य जीवन व्यतीत हो जाता है।

■